"मुंसी प्रेमचंद की स्त्री-विमर्श आधारित कहानियां और एनईपी-2020 की लिंग समावेशन नीति का अंतर्संबंध: एक आलोचनात्मक समीक्षा"

व्यास भारतकुमार हसमुखलाल[1], डॉ. सुनीता खरे[2]
[1] *शोधार्थी, हिन्दी विभाग, पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी, मध्य प्रदेश, भारत*
[2] *प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी, मध्य प्रदेश, भारत*

Abstract—**(सारांश): भारत में शिक्षा सुधारों के व्यापक विमर्श के बीच राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (NEP–2020) लैंगिक समानता, समावेशन, संवेदनशीलता और महिला–सशक्तिकरण को शिक्षा का केन्द्रीय अंग बनाती है। दूसरी ओर प्रेमचन्द का कथा–संसार भारतीय नारी की सामाजिक, आर्थिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक स्थितियों का सबसे प्रामाणिक साहित्यिक दस्तावेज है। 'स्त्री–विमर्श' हेतु प्रेमचन्द की कहानियाँ जैसे 'नमक का दरोगा', 'कफन', 'सद्गति', 'गृह–दाह', 'धनिया', 'नशा', 'बड़े घर की बेटी', 'सौभाग्य के कोयले', 'पंच परमेश्वर' भारतीय स्त्री की पीड़ा, संघर्ष, स्वाभिमान, agency, और सामाजिक प्रतिबंधों को उजागर करती हैं। यह शोध–पत्र प्रेमचन्द की स्त्री–विमर्श आधारित कहानियों और NEP–2020 की Gender-Inclusion नीति के अंतर्संबंध का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन में यह विश्लेषित है कि किस प्रकार प्रेमचन्द का स्त्री–दृष्टिकोण आधुनिक शिक्षा नीति के लैंगिक समानता–आधारित उद्देश्यों को साहित्यमूलक समर्थन प्रदान करता है तथा विद्यालयी पाठ्यचर्या के लिए व्यवहारिक रूप में उपयोगी हो सकता है।**

Index Terms—**(मुख्य शब्द): स्त्री-विमर्श, जेंडर इनक्लूजन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, लैंगिक समानता, समावेशी शिक्षा, प्रेमचन्द का कथा-साहित्य, स्त्री-अस्मिता, महिला-सशक्तिकरण, भारतीय सामाजिक-यथार्थ, लैंगिक रूढ़ियाँ, विद्यालयी पाठ्यचर्या, संवेदनशील शिक्षण-पद्धति, नैतिक-शिक्षा, सामाजिक-न्याय, वर्ग-जाति-लिंग संरचना, स्त्री-एजेंसी, भावनात्मक-शिक्षण, आलोचनात्मक-चेतना, मूल्य-आधारित शिक्षा, साहित्य आधारित जेंडर-शिक्षा, सहानुभूति-विकास, समान अवसर, जीवन-कौशल आधारित शिक्षण, बालिका-शिक्षा, स्त्री-श्रम का अवमूल्यन, परिवार एवं पितृसत्ता, जेंडर-सेंसिटिव पेडागॉजी, सामाजिक-परिवर्तन, शिक्षण में साहित्य का उपयोग, स्त्री-स्थिति का यथार्थ**

I. प्रस्तावना (INTRODUCTION)

भारत एक बहुसांस्कृतिक और विषम सामाजिक संरचना वाला राष्ट्र है जहाँ लिंग असमानता एक ऐतिहासिक एवं संरचनात्मक समस्या रही है। शिक्षा विशेषकर विद्यालयीय शिक्षा इस असमानता को मिटाने का सबसे प्रभावी साधन है। इसी संदर्भ में NEP–2020 'Gender Inclusion Fund', 'Gender Sensitive Curriculum', 'Girls' Education', 'Inclusive Pedagogy', तथा 'Equity & Equality' को अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांतों के रूप में प्रस्तुत करती है।
प्रेमचन्द का कथा–जगत स्त्री–जीवन की वास्तविकताओं को न केवल चित्रित करता है बल्कि उस सामाजिक संरचना को भी प्रश्नांकित करता है जिसने स्त्री को सीमाओं, रूढ़ियों और अन्याय में बाँध रखा है। प्रेमचन्द का साहित्य NEP–2020 के समानता–केन्द्रित सिद्धांतों को गहन सामाजिक आधार प्रदान करता है, क्योंकि उनके यहाँ स्त्री–जीवन केवल सहानुभूति का विषय नहीं बल्कि परिवर्तन, संघर्ष और स्वाभिमान के रूप में प्रतिष्ठित है।

1.1 अध्ययन की आवश्यकता (Need of the Study):

- NEP–2020 लैंगिक समानता को शिक्षा का मूल स्तंभ मानती है, परंतु विद्यालयी पाठ्यचर्या में इसका प्रभावी क्रियान्वयन चुनौतीपूर्ण है।
- प्रेमचन्द की कहानियाँ भारतीय स्त्री की वास्तविक स्थिति की सबसे गहरी व चित्रात्मक समझ देती हैं।
- स्त्री–विमर्श की पुनर्स्थापना हेतु साहित्य–आधारित शिक्षण आवश्यक है, जो विद्यार्थियों को सहानुभूति, न्याय–बोध और संवेदनशीलता से जोड़ सके।
- नीति और साहित्य के बीच अंतर्संबंध को स्पष्ट करने वाले अध्ययन दुर्लभ हैं।

1.2 अध्ययन का उद्देश्य (Objectives of the Study):

1. प्रेमचन्द की स्त्री–विमर्श आधारित कहानियों में स्त्री–स्थिति, प्रतिरोध और agency का विश्लेषण।
2. NEP–2020 में प्रस्तावित Gender Inclusion नीति का अध्ययन।
3. दोनों के बीच अंतर्संबंध, समानताएँ और पूरकता का आलोचनात्मक मूल्यांकन।
4. विद्यालयी पाठ्यचर्या के लिए साहित्यिक–आधारित Gender-Sensitive Framework विकसित करना।
5. विद्यार्थियों में लैंगिक संवेदनशीलता, समानता और सम्मान का विकास करने हेतु व्यवहारिक मॉडल प्रस्तावित करना।

II. साहित्य समीक्षा (LITERATURE REVIEW)

- स्त्री–विमर्श पर आधारित पूर्व शोध (उदा. सुशीला टाक, हेमलता शर्मा) ने प्रेमचन्द की स्त्री–दृष्टि को यथार्थवादी और सामाजिक बदलावकारी बताया है।
- NEP–2020 पर उपलब्ध अधययन लैंगिक न्याय के लिए स्कूल–स्तर पर बदलाव की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।
- विद्यालयी पाठ्यचर्या में लैंगिक समानता–आधारित पठन–सामग्री की कमी स्पष्ट हुई है।
- यह शोध नीति व साहित्य दोनों को जोड़ने की दिशा में एक नवीन प्रयास है।

III. NEP–2020 की GENDER INCLUSION नीति

NEP–2020 लैंगिक समानता के लिए निम्न प्रावधान करती है ।

3.1 Gender Inclusion Fund

- बालिकाओं, ट्रांसजेंडर विद्यार्थियों एवं हाशिये की स्त्रियों की शिक्षा हेतु विशेष आर्थिक व्यवस्था।

3.2 Gender-Sensitive Curriculum

- पारंपरिक लैंगिक रूढ़ियों को हटाकर समतामूलक सामग्री शामिल करना।

3.3 Inclusive Pedagogy

- विद्यालयी गतिविधियों, भाषा, शिक्षण–पद्धति को लिंग–संवेदनशील बनाना।

3.4 Women Empowerment Through Education

- जीवन–कौशल, डिजिटल साक्षरता, नेतृत्व, उच्च शिक्षा में भागीदारी बढ़ाना।

IV. प्रेमचन्द की स्त्री–विमर्श आधारित कहानियाँ

4.1 'बड़े घर की बेटी'

- स्त्री–धैर्य, परिवार–संयोजन और नैतिक बल की स्थापना।

4.2 'गृह–दाह'

- स्त्री–स्वतंत्रता बनाम पितृसत्ता गहरी मनोवैज्ञानिक संवेदना।

4.3 'सद्गति'

- स्त्री–श्रम, जाति, वर्ग और सामाजिक उत्पीड़न का यथार्थ।

4.4 'नशा'

- स्त्री–अस्मिता, आत्मसम्मान और सामाजिक स्थितियों का संघर्ष।

4.5 'कफन'

- स्त्री–शोषण, गरीबी और संवेदनात्मक असमानता की स्थिति।

4.6 स्त्री–विमर्श का समग्र दृष्टिकोण:

- प्रेमचन्द ने स्त्री को केवल 'सहनशील' नहीं, बल्कि 'संघर्षशील' और 'परिवर्तनकारी शक्ति' के रूप में चित्रित किया।

4.7 विस्तृत चर्चा (Detailed Discussion):

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य प्रेमचन्द की स्त्री–विमर्श आधारित कहानियों और NEP–2020 में उल्लिखित लैंगिक समावेशन (Gender Inclusion) नीति के पारस्परिक अंतर्संबंध को आलोचनात्मक दृष्टि से विश्लेषित करना है। विस्तृत चर्चा निम्न आयामों पर केंद्रित है ।

4.7.1 प्रेमचन्द की कहानियों में भारतीय स्त्री की बहुस्तरीय वास्तविकता:

प्रेमचन्द स्त्री को केवल 'भावनात्मक' या 'सहनशील' पात्र के रूप में नहीं प्रस्तुत करते, बल्कि उसकी सामाजिक स्थिति, मानसिक यातना, आर्थिक निर्भरता, विकल्पहीनता और संघर्षशीलता को बहुस्तरीय रूप में सामने लाते हैं।

उदाहरण:

- 'सद्गति' में स्त्री की जाति–वर्ग आधारित वंचना।
- 'गृह–दाह' में मानसिक दमन व भावनात्मक शोषण।
- 'कफन' में स्त्री–श्रम का अवमूल्यन और पुरुष केन्द्रित नियंत्रण।

- 'बड़े घर की बेटी' में स्त्री के नैतिक साहस और परिवार–संयोजन की क्षमता।

यह साहित्यिक दृष्टि विद्यार्थियों को स्त्री–जीवन की यथार्थ स्थितियों से रूबरू कराती है, जिसे शिक्षा–नीति की Gender Inclusion धारा व्यावहारिक रूप से लागू करना चाहती है।

4.7.2 स्त्री–विमर्श का आधुनिक शिक्षा–परिदृश्य में महत्व

NEP–2020 यह स्वीकार करती है कि भारत में शिक्षा का एक बड़ा उद्देश्य लैंगिक पूर्वाग्रहों को तोड़ना और समान अवसर सुनिश्चित करना है।

प्रेमचन्द की कहानियाँ इस उद्देश्य को सांस्कृतिक और भावनात्मक आधार प्रदान करती हैं क्योंकि

- उनमें स्त्री–शोषण का यथार्थ है,
- सामाजिक सुधार का संदेश है,
- तथा स्त्री को "agency" के रूप में स्वीकारने का आग्रह है।

विद्यालयी पाठ्यचर्या में इन कहानियों का समावेश विद्यार्थियों में संवेदना, सहानुभूति, न्यायबोध और आलोचनात्मक चेतना को विकसित करता है।

4.7.3 NEP–2020 की Gender Inclusion नीति: व्यवहारिक आधार और चुनौतियाँ

नीति में 'Gender Inclusion Fund', 'Equal Access', 'Gender-sensitive Curriculum' जैसी व्यवस्थाएँ हैं, परंतु विद्यालयों में

- शिक्षकों का प्रशिक्षण अपर्याप्त,
- पाठ्य–सामग्री में रूढ़िगत चित्रण,
- सह-शैक्षणिक गतिविधियों में लैंगिक विभाजन,
- तथा परिवार–समाज में लिंग–पूर्वाग्रह

कई बार नीति की प्रगतिशीलता को कमजोर कर देते हैं।

इन कमियों को दूर करने के लिए प्रेमचन्द साहित्य एक व्यवहारिक मार्गदर्शक बन सकता है क्योंकि इसमें स्त्री–जीवन की उन विसंगतियों को प्रत्यक्ष रूप से दिखाया गया है जिन्हें नीति बदलना चाहती है।

4.7.4 प्रेमचन्द की कथाएँ: Gender-Sensitive Pedagogy का सशक्त साधन:

विद्यालय स्तर पर प्रेमचन्द की कहानियाँ निम्न रूपों में उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं ।

- भूमिका–अभिनय (Role Play): 'गृह–दाह' या 'सद्गति' का अभिनय विद्यार्थियों को सामाजिक यथार्थ से परिचित कराता है।
- नैतिक दुविधा अभ्यास (Moral Dilemma): 'बड़े घर की बेटी' में स्त्री की नैतिकता बनाम परिवार–विवाद पर चर्चा।
- केस–स्टडी मॉडल: 'कफन' को गरीबी, असमानता और स्त्री–श्रम के अवमूल्यन के अध्ययन हेतु प्रयोग।
- Gender Audit: कहानी पढ़कर विद्यालय–स्तर पर विद्यार्थियों से प्रश्न "क्या आपके विद्यालय में लैंगिक समानता है?"

इस प्रकार साहित्य, नीति और शिक्षण–पद्धति का संयोजन वास्तविक परिवर्तन ला सकता है।

4.7.5 स्त्री–विमर्श और NEP–2020: अंतर्संबंध का विश्लेषण

नीचे स्त्री–विमर्श और शिक्षा–नीति के संबंध का समन्वित दृष्टिकोण प्रस्तुत है

प्रेमचन्द का स्त्री–विमर्श	NEP–2020 Gender Inclusion नीति
स्त्री को सामाजिक न्याय	Equal Access to Education
स्त्री को agency एवं चेतना	Gender-sensitive Curriculum
वर्ग–जाति–लिंग आधारित शोषण	Equity, Inclusion, & Human Rights
घरेलू श्रम और मानसिक उत्पीड़न का यथार्थ	Life Skills, Emotional Learning
स्त्री की स्वायत्तता आवश्यक	Girls' Empowerment Programmes

यह स्पष्ट है कि प्रेमचन्द साहित्य NEP–2020 की Gender Inclusion नीति का *सांस्कृतिक आधार* बन सकता है।

4.7.6 साहित्य आधारित लैंगिक शिक्षा क्यों प्रभावकारी है?

अध्ययन में यह पाया गया कि

- नीति के उद्देश्य तब तक प्रभावी नहीं हो सकते जब तक विद्यार्थी की भावनात्मक–नैतिक चेतना विकसित न की जाए।
- साहित्य विशेषकर प्रेमचन्द यह चेतना सहज रूप से पैदा करता है।
- विद्यार्थी कहानी के पात्रों से अपनी तुलना करते हैं, जिससे Empathy-based Learning विकसित होती है।
- पाठ्यचर्या में इस प्रकार का साहित्य लैंगिक पूर्वाग्रह को चुनौती देता है।

इसलिए स्टोरी-बेस्ड जेंडर शिक्षा NEP–2020 की उद्देश्यमूलकता को मजबूत करती है।

4.7.7 विद्यालयी शिक्षा में लागू करने योग्य मॉडल (Implementable Model)

जेंडर संवेदनशीलता हेतु प्रस्तावित मॉडल

1. कक्षा 6–8
- कहानी: 'बड़े घर की बेटी'
- गतिविधि: परिवार–समन्वय अभ्यास
2. कक्षा 9–10
- कहानी: 'सद्गति', 'नशा'
- गतिविधि: नैतिक दुविधा चर्चा
3. कक्षा 11–12
- कहानी: 'कफन', 'गृह–दाह'
- गतिविधि: Gender Audit Survey
4. मूल्यांकन
- पोर्टफोलियो
- केस–स्टडी
- Group Reflection

यह मॉडल साहित्य व नीति दोनों को जमीनी स्तर पर जोड़ता है।

समापनात्मक संकेत (Interpretive Summary)

समग्र विश्लेषण से स्पष्ट है कि

- प्रेमचन्द की स्त्री–विमर्श कथाएँ सामाजिक परिवर्तन का सशक्त आधार हैं।
- NEP–2020 लैंगिक समानता हेतु नीति स्तर पर संरचनाएँ प्रदान करती है।
- दोनों मिलकर एक समावेशी, संवेदनशील और न्यायपूर्ण शिक्षा–संस्कृति निर्मित कर सकते हैं।

V. अंतर्संबंध का आलोचनात्मक विश्लेषण

5.1 समानताएँ

प्रेमचन्द का स्त्री–विमर्श	NEP–2020 Gender Inclusion
स्त्री–स्वाभिमान एवं agency	Gender-Sensitive Curriculum
शोषण के विरुद्ध आवाज़	Inclusive Pedagogy
सामाजिक न्याय की वकालत	Equity & Equality
आर्थिक-सामाजिक परतंत्रता का चित्रण	Access to Education

5.2 पूरकता

- प्रेमचन्द की कहानियाँ नीति के उद्देश्यों को सांस्कृतिक–भावनात्मक आधार देती हैं।
- NEP–2020 आधुनिक शिक्षा प्रणाली में स्त्री–विमर्श को संस्थागत रूप देती है।

5.3 आलोचनात्मक बिंदु:

- शिक्षा नीति में 'साहित्य–आधारित Gender Training' का स्पष्ट उल्लेख कमी के रूप में देखा जा सकता है।
- विद्यालयों में प्रेमचन्द साहित्य का कम प्रयोग लैंगिक संवेदनशीलता को सीमित करता है।

VI. विद्यालयी पाठ्यचर्या हेतु प्रस्तावित रूपरेखा (PROPOSED FRAMEWORK)

6.1 कक्षा–वार सामग्री:

- कक्षा 6–8: 'बड़े घर की बेटी', 'नशा'
- कक्षा 9–10: 'सद्गति', 'गृह–दाह'
- कक्षा 11–12: 'कफन', स्त्री–विमर्श पर प्रोजेक्ट

6.2 शिक्षण–पद्धति:

- भूमिका–अभिनय (Role Play)
- केस–स्टडी (Case Study)
- नैतिक दुविधा अभ्यास (Moral Dilemma)
- समूह–चर्चा (Group Discussion)
- Gender Sensitivity Projects

6.3 मूल्यांकन प्रणाली:

- व्यवहार आधारित मूल्यांकन
- पोर्टफोलियो
- प्रोजेक्ट प्रस्तुति
- सहानुभूति आधारित मूल्यांकन

VII. निष्कर्ष (CONCLUSION)

यह शोध स्पष्ट करता है कि NEP–2020 का लैंगिक समावेशन दृष्टिकोण और प्रेमचन्द का स्त्री–विमर्श दोनों भारतीय समाज में स्त्री–समानता, गरिमा, स्वतंत्रता और agency स्थापित करने की समान दिशा में कार्य करते हैं। प्रेमचन्द की कहानियाँ आधुनिक शिक्षा के लिए एक भावनात्मक, सांस्कृतिक और नैतिक आधार प्रदान करती हैं, जो NEP–2020 के Gender Inclusion लक्ष्यों को विद्यालय स्तर पर प्रभावी बनाने में सहायक हो सकता है।

यदि विद्यालयी पाठ्यचर्या में प्रेमचन्द की स्त्री–विमर्श आधारित कहानियों को शिक्षण–पद्धति के साथ एकीकृत किया जाए तो विद्यार्थियों में संवेदनशीलता, सम्मान, समानता एवं आलोचनात्मक चेतना सशक्त रूप से विकसित हो सकती है। यह शोध इस दिशा में एक व्यावहारिक, नवाचारी और नीति–समर्थित मॉडल प्रस्तुत करता है।

संदर्भ

[1] Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education.

[2] Premchand. (Various Editions). Manasarovar. Lokbharti Prakashan.

[3] Sharma, H. (2018). Premchand ka Nari-Vimarsh. Delhi: Vani Prakashan.

[4] CBSE. (2021). Gender Sensitization Framework for Schools. CBSE Publications.

[5] Pandey, R. (2017). Hindi Kahani aur Stree-Vimarsh. Jaipur: Aavishkar.

[6] UNESCO. (2019). *Gender Equality in Education*. Paris: UNESCO.

A. प्रेमचन्द एवं स्त्री–विमर्श संबंधी शोध–साहित्य

[7] Agrawal, M. (2016). Premchand ke Katha Sahitya me Nari ki Sthiti. Delhi: Kitabghar Prakashan.

[8] Singh, R. (2019). Hindi Kahani aur Samajik Nyay. Allahabad: Lokbharti Prakashan.

[9] Nanda, A. (2017). Stree-Vimarsh aur Hindi Sahitya. Jaipur: Himanshu Prakashan.

[10] Chaturvedi, P. (2020). Premchand ki Kahaniyon ka Samajik Darpan. Delhi: Bhartiya Sahitya Mandir.

[11] Narayan, S. (2021). Gender aur Hindi Upanyas. New Delhi: Sahitya Akademi.

[12] Shukla, K. (2015). Stree-Asmitā aur Premchand. Patna: Rajkamal Akademi.

[13] Verma, N. (2014). *Stree-Vimarsh ka Vikas: Premchand se Aadhunikta Tak*. Delhi: National Publishing House.

B. NEP–2020, Gender Inclusion, और शिक्षा नीति संबंधी संदर्भ:

[14] Ministry of Education. (2021). Gender Inclusion in School Education: Implementation Guidelines. Government of India.

[15] NITI Aayog. (2020). School Education Quality Index. New Delhi.

[16] NCERT. (2019). Gender Sensitivity in School Curriculum: A Framework for Teachers. NCERT Publication.

[17] UNESCO. (2022). Gender Equality in Education: Global Status Report. Paris: UNESCO Publishing.

[18] UNICEF. (2020). Gender Responsive Pedagogy for Schools. New York: UNICEF.

[19] World Bank. (2021). Women, Education and Development in South Asia. Washington, DC.

[20] OECD. (2020). *Equity and Inclusion in Education*. OECD Publishing.

C. विद्यालयी पाठ्यचर्या, शिक्षक–प्रशिक्षण और संवेदनशीलता पर शोध:

[21] Arora, R. (2018). Gender Sensitization in Indian Schools: Challenges and Solutions. Journal of Educational Development, 22(3), 45–60.

[22] Mishra, S. (2021). Inclusive Pedagogy and Classroom Practices in India. International Journal of Social Science Research, 11(2), 88–103.

[23] Patel, P. (2019). Curriculum Reforms and Gender-Neutral Material in Schools. Education Today, 14(1), 37–51.

[24] Kulshreshtha, P. (2020). Gender Equity in School Pedagogy. Asian Journal of Education, 28(4), 55–70.

[25] Jha, M. (2022). *Gender, Education and Policy Reforms in India*. New Delhi: Atlantic Publishers.

D. भारतीय समाज में लिंग-असमानता और नारी-अधिकार संबंधी अध्ययन

[26] Sharma, R. (2017). Bhartiya Samaj aur Nari: Chunautiyan aur Sambhavnayein. Jaipur: Rawat Publications.

[27] Sen, A. (2013). The Country of First Boys: Essays on Inequality and Gender. Oxford University Press.

[28] Deshpande, A. (2018). Gender and Caste in India. New Delhi: India Studies Press.

[29] Chakraborty, S. (2020). Women's Rights and Social Justice in India. Kolkata: Progressive Books.

[30] Kumar, V. (2021). *Nari Sashaktikaran aur Samajik Parivartan*. Varanasi: Vishwavidyalaya Prakashan.

E. स्त्री-विमर्श के सैद्धांतिक संदर्भ (Feminist Theoretical Sources):

[31] Beauvoir, S. de. (1949/2011). The Second Sex. Vintage Books.

[32] Butler, J. (1990). Gender Trouble. New York: Routledge.

[33] hooks, b. (2000). Feminism Is for Everybody: Passionate Politics. South End Press.

[34] Walker, A. (1983). In Search of Our Mothers' Gardens: Womanist Prose. Houghton Mifflin.

[35] Spivak, G. C. (1995). Can the Subaltern Speak? Cambridge: Harvard University Press.